24

एक अस्पष्ट वचन और ''स्पष्ट'' सच्चाइयां

(5:18-21 का अध्ययन और 5:12-21 का निष्कर्ष)

यह उस पर जिसे ''पूरी बाइबल में सबसे कठिन वचन'' कहा गया है[1] अर्थात रोमियों 5:12-21 पर हमारा तीसरा पाठ है। इस पद्य में पौलुस ने आदम और मसीह की तुलना और उन में अन्तर किया। पहले हम आदम और मसीह के परिचय (आयतें 12-14) और फिर उनमें अन्तर (आयतें 15-17) देख चुके हैं। इस पाठ में हम उनकी तुलना देखेंगे (आयतें 18-21)।

ऐसे वचनों के साथ व्यवहार करने का एक ख़तरा यह है कि वचन अस्पष्ट पहलुओं से पंगा लेने पर, हमारे लिए उन सच्चाइयों के अर्थ को न समझना आसान हो जाता है जिन्हें परमेश्वर ने चाहा कि हमें पता हो। रोमियों की पुस्तक के इस भाग के अपने अध्ययन को समाप्त करने से पहले, मैं इस वचन से थोड़ी बहुत स्पष्ट सच्चाइयों की समीक्षा करना चाहता हूं।

एक अस्पष्ट वचन (5:18-21)

हमारे वचन पाठ के पिछले भाग (आयतें 15-17) में आदम और मसीह में *अन्तर* पर ज़ोर दिया गया था। जिसमें पौलुस ने कहा कि परमेश्वर का ''दान अपराध *जैसा* नहीं।'' इस भाग में फोकस (आयतें 18-21) आदम और मसीह में *तुलना* पर है। तुलना के शब्दों पर ध्यान दें: ''इसलिए जैसा ... वैसा ही'' (आयत 18); ''क्योंकि जैसा ... वैसे ही'' (आयत 19); ''कि जैसा ... वैसा ही'' (आयत 21)।

पौलुस के अन्तर और तुलनाएं अक्सर बहुत कम अन्तर के साथ एक-दूसरे से मिलते-जुलते हैं। तौ भी इस पद्य की अन्तिम आयतों में, प्रेरित ने उन ढंगों पर ज़ोर दिया जिनमें आदम और मसीह मिलते-जुलते थे। या और स्पष्टता से कहें तो उन ढंगों पर जिनमें उनके *काम* मिलते जुलते थे।

दोनों कामों के विश्व्यापी प्रभाव थे (आयत 18)

जैसा पहले कहा गया है, पौलुस ने आयत 12 में आरम्भ किए वाक्य को पूरा नहीं किया: ''इसलिए जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया और पाप के द्वारा मृत्यु आई और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, क्योंकि सब ने पाप किया-।'' मैं जब किसी वाक्य को अधूरा छोड़कर किसी दूसरे विचार में जाता हूं, तो आमतौर पर अपने मूल विचार को भूल जाता हूं, परन्तु पौलुस नहीं भूला। आयत 18 में उसने आयत 12 के विचार को फिर से बताया: ''इसलिए जैसा एक अपराध सब मनुष्यों के लिए दण्ड की आज्ञा का कारण हुआ, वैसा ही एक धर्म का काम[2] सब मनुष्यों के लिए जीवन के निमित्त धर्मी ठहराए जाने का कारण हुआ।'' ''एक अपराध'' अदन में

किया गया आदम का काम था, जबकि ''धर्म का काम'' क्रूस पर यीशु की मृत्यु थी।

यह चर्चा करते हुए कि रोमियों 5:12-21 क्या *नहीं* सिखाता (''एक मनुष्य के द्वारा'' पाठ में), हमने देखा कि कुछ लोग आयत 18 का इस्तेमाल ''सबके लिए'' सिखाने की कोशिश के लिए करते हैं जो यह सिखाता है कि सब लोग उद्धार पाएंगे। यह स्थिति बाइबल की स्पष्ट शिक्षा के विपरीत है (मत्ती 7:13, 14; 25:41, 46; रोमियों 2:5-9)। यदि यह वचन सबके पापी होने की शिक्षा नहीं देता, तो फिर यह क्या सिखाता है?

पूरे वचन का मुख्य ज़ोर यह है कि आदम के पाप ने सब लोगों को परीक्षाओं और प्रलोभनों से भरे संसार में रहने का ''दोषी बनाया'' और अन्त में शारीरिक मृत्यु पाने का भी। यह मृत्यु वाला वाक्य यीशु के ''एक कार्य'' के द्वारा उलट दिया गया था। अब, प्रभु की सहायता से हम पाप और मृत्यु पर विजय पा सकते हैं (रोमियों 8:11, 13, 35-39)।

क्या आप ''दण्ड'' और ''धर्मी ठहराए जाने'' के अर्थ आत्मिक संसार के लिए मानने को प्राथमिकता देते हैं? यदि ऐसा है, तो आयत 18 को अनकही परन्तु समझ आने वाली शर्तों के साथ *कथन* के रूप में देखा जा सकता है। इससे आयत 18 को पढ़ना कुछ इस प्रकार होगा: ''इसलिए जैसा एक अपराध सब मनुष्यों [जो पाप करते हैं] के लिए दण्ड की आज्ञा का कारण हुआ, वैसा ही एक धर्म का काम सब मनुष्यों [जो विश्वास करते हैं] के लिए जीवन के निमित्त धर्मी ठहराए जाने का कारण हुआ।''[3]

परन्तु कोई आयत 18 की व्याख्या करता है, यह तथ्य स्पष्ट है: एक ढंग जिसमें आदम का कार्य और मसीह का कार्य समान थे वह यह है कि दोनों कार्यों के विश्वव्यापी प्रभाव थे।

दोनों कार्यों में आज्ञा मानने या न मानने का विकल्प था (आयत 19)

आदम और मसीह के कार्यों के मिलते-जुलते होने का एक ढंग इस तथ्य में है कि दोनों में आज्ञा मानने या न मानने का विकल्प था। आयत 19 कहती है, ''क्योंकि जैसा एक मनुष्य के *आज्ञा न मानने* से बहुत [सब] लोग पापी ठहरे, वैसे ही एक मनुष्य के *आज्ञा मानने* से बहुत [सब] लोग धर्मी ठहरेंगे।''

अदन की वाटिका में, आदम चाहता तो परमेश्वर की आज्ञा मानता या उसकी आज्ञा न मानता, और आदम ने आज्ञा न मानना चुना। गतसमनी के बाग में यीशु के पास भी ऐसी ही पसन्द थी; परन्तु जहां आदम के कहने का अर्थ था कि ''मेरी इच्छा पूरी हो,'' वहीं यीशु ने कहा, ''तेरी इच्छा पूरी हो'' (मत्ती 26:42; KJV)।[4] अपने पिता की आज्ञा मानने की यीशु की तैयारी इन जैसी आयतों में ज़ोर देकर बताई गई है:

> पुत्र होने पर भी, उसने दुख उठा उठाकर आज्ञा माननी सीखी। और सिद्ध बनकर, अपने सब आज्ञा मानने वालों के लिए सदा काल के उद्धार का कारण हो गया (इब्रानियों 5:8, 9)।
>
> मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आप को दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली (फिलिप्पियों 2:8)।

आयत 19 में पौलुस ने लिखा कि आदम के आज्ञा न मानने का एक परिणाम यह हुआ कि

सब लोग ''पापी ठहरे।'' इसे समझने का सबसे आसान ढंग यह मान लेना है कि आदम के पाप ने हर किसी को प्रभावित किया। हम सब उसके पाप के परिणामों को भुगतते हैं, इसलिए यह *ऐसा है* जैसे हमने ही वह पाप किया हो।

''वैसे ही'' यीशु के आज्ञा मानने के द्वारा सब ''लोग धर्मी ठहरेंगे।'' एक बार फिर ज़ोर वाक्य के उलट पर है। मेकोर्ड के अनुवाद में है ''वैसे ही ... छुटकारे का दान जो धर्म के एक कार्य के द्वारा सब लोगों पर जीवन लाता है।'' जे. डी. थॉमस ने आयत 19 के सार को इस प्रकार संक्षिप्त किया है: ''बहुत से लोग [उस दोष के द्वारा जो उनका नहीं था] पापी ठहरते थे, वैसे ही एक के आज्ञा मानने के द्वारा बहुत से धर्मी बनेंगे [जिसमें उनकी अपनी कोई खूबी नहीं है]।''[15]

आयत 19 को आप शर्त सहित के रूप में देखना चाहें तो देख सकते हैं, जिसमें अनकही परन्तु समझ आने वाली शर्तें हैं: ''क्योंकि जैसा एक मनुष्य के आज्ञा न मानने से बहुत से लोग पापी ठहरे [जब उन्होंने भी आज्ञा तोड़ी], वैसे ही एक मनुष्य के आज्ञा मानने से बहुत लोग धर्मी ठहरेंगे [जब वे भी आज्ञा मानते हैं]।''

रुकावट: ''पर क्या व्यवस्था से सहायता नहीं मिलती?'' (आयत 20)

पौलुस को इस बात का ध्यान रहता था कि उसकी बात पर यहूदी पाठकों की क्या प्रतिक्रिया हो सकती है। इसलिए उसने यहूदियों द्वारा पूछे जाने वाले सम्भावित प्रश्नों का उत्तर देने के लिए विचार की अपनी रेखा को बीच में रोक दिया: ''परन्तु मूसा की व्यवस्था का क्या काम है? क्या व्यवस्था ने आदम के पाप से होने वाली विपरीत स्थितियों को सही या कम से कम उनमें सुधार नहीं किया?'' डंके की चोट पर पौलुस का जवाब था कि ''नहीं!''

उसने कहा, ''व्यवस्था बीच में आ गई, कि अपराध बहुत हों'' (आयत 20क)। इस बात पर किसी यहूदी की क्या प्रतिक्रिया हो सकती है मैं उसकी कल्पना कर सकता हूं: ''नहीं, नहीं व्यवस्था का उद्देश्य तो अपराध को नहीं, बल्कि धार्मिकता को बढ़ावा देना था।'' और वह सही भी है। गलातियों के नाम अपने पत्र में, पौलुस ने लिखा कि ''[व्यवस्था] तो अपराधों के कारण बाद में दी गई [अब्राहम से बान्धी गई वाचा]'' (गलातियों 3:19)। NASB वाली मेरी प्रति में अपराधों के कारण यह टिप्पणी है: ''[अपराधों] की परिभाषा के'' व्यवस्था लोगों को पाप को पहचानने में सहायता के लिए दी गई जिससे लोग पाप *न* करने को उत्साहित *न* हों।

तौ भी व्यवस्था के दिए जाने पर एक *परिणाम* यह था कि यह पाप को *कम* करने के बजाय *बढ़ाने* का कारण बनी। इसका कारण अध्याय 7 में पहुंचने पर समझाया जाए। AB में अपने एम्पलीफाइड टैक्स्ट ने कुछ एक कारण जोड़े हैं: ''परन्तु फिर बीच में व्यवस्था आ गई, [केवल] अपराध को विस्तार देने और बढ़ाने [जो इसे और स्पष्ट और रोमांचकारी विरोध बनाता है]।''

पौलुस के कहने का अर्थ था कि व्यवस्था के दिए जाने से राहत नहीं मिली बल्कि इससे स्थिति और बिगड़ गई। लियोन मौरिस ने लिखा है कि व्यवस्था को ''पाप को रोकने की कोई चिंता नहीं थी [उसके लिए यह बहुत देर बाद आई]। न ही इसे उद्धार की चिंता थी [उसके लिए यह बहुत कमज़ोर थी]।''[17] एफ़. एफ़. ब्रूस ने टिप्पणी की है कि मूसा की व्यवस्था ''व्यावहारिक उद्देश्य के लिए अस्थाई माप के रूप में दी गई थी,'' परन्तु इसका ''छुटकारे के इतिहास में कोई स्थाई महत्व'' नहीं था।[8]

यह कहने के बाद कि व्यवस्था के कारण पाप बढ़ा ही, पौलुस अपनी यादगारी बात कहने के लिए आगे बढ़ा: ''परन्तु जहां पाप बहुत हुआ, वहां अनुग्रह उससे भी कहीं अधिक हुआ'' (रोमियों 5:20ख)। इस दावे में पौलुस ने शब्दों के खेल का इस्तेमाल किया। अनुवादित यूनानी शब्द ''उससे भी कहीं अधिक'' पूर्वसर्ग *huper* के साथ ''भरपूर'' के लिए शब्द है, जिससे हमें अंग्रेज़ी शब्द ''हाइपर'' मिला है। इसका लातीनी सामानांतर है ''सुपर।'' आयत 20 के अन्तिम भाग का अनुवाद इस प्रकार हो सकता है, ''जहां पाप भरपूर था,[9] अनुग्रह *उससे* भी भरपूर'' था। अन्य शब्दों में परमेश्वर का अनुग्रह पाप के कारण हो सकने वाली हमारी किसी भी समस्या को निपटाने के लिए पर्याप्त से *अधिक* है। फिलिप्स ने यह अनुवाद किया है: ''पाप को चाहे चौड़ा और गहरा दिखाया जाता है, परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो कि उसका अनुग्रह उससे भी चौड़ा और गहरा है!''

दोनों कार्यों ने राज्य स्थापित किए (आयत 21)

''पाप'' और ''अनुग्रह'' के हवाले पौलुस को विचार की इस मुख्य रेखा में वापस ले आए और आदम के काम और मसीह के काम में यह उसकी तीसरी तुलना है। आयत 21क कहती है ''कि जैसा पाप ने मृत्यु फैलाते हुए राज किया।'' इससे पहले पौलुस ने मृत्यु को राज करते दिखाया था (आयतें 14, 17)। अब उसने तस्वीर को थोड़ा सा बदलकर पाप को निरंकुश शासक के रूप में दिखाया जो अपनी प्रजा को काबू में रखने के लिए मृत्यु की धमकी देता है। NCV में ''पाप हम पर शासन करने के लिए किसी समय मृत्यु का इस्तेमाल करता था'' है।

परन्तु पौलुस ने फिर से पाप पर अनुग्रह की श्रेष्ठता पर ज़ोर दिया: ''वैसा ही हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा अनुग्रह भी'' (आयत 21ख)। पाप मनुष्य जाति पर राज करने के लिए भय का इस्तेमाल करता है, जबकि अनुग्रह प्रेम का इस्तेमाल करता है। ''सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता है'' (1 यूहन्ना 4:18)। बेशक यह समझ आता है कि केवल अनुग्रह उन्हीं लोगों के मनों पर राज करता है, जिन्होंने विश्वास के द्वारा परमेश्वर के अनुग्रह को *स्वीकार कर लिया* है। इस कारण NIrV ने आयत के इस भाग का अनुवाद इस प्रकार किया है, ''अनुग्रह भी उन लोगों के जीवनों में ऐसे ही राज करता है जो परमेश्वर के साथ सही हैं।''

विचार की अपनी रेखा को पूरा करते हुए पौलुसे परमेश्वर के अनुग्रह के दान के ''बहुत अधिक'' होने की ओर मुड़ गया: ''यीशु मसीह के द्वारा अनन्त जीवन के लिए'' (आयत 21ग) वास्तविक ''जीवन'' परमेश्वर के सामने होना है, और ''अनन्त जीवन'' अनन्तकाल तक उसकी उपस्थिति में रहना है (देखें प्रकाशितवाक्य 21:22, 23; 22:3-5)। एक बार फिर पौलुस ने इस बात पर ज़ोर दिया कि यह केवल ''हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा'' ही हो सकता है!

''स्पष्ट'' सच्चाइयां (5:12-21)

हमने रोमियों 5:12-21 तक अपने तरीके से काम किया है। क्या इसका अर्थ यह है कि मैं लिखी गई हर बात से संतुष्ट हूं? नहीं। क्या इसका अर्थ यह है कि मुझे पक्का विश्वास है कि मैं हर लिखी बात को समझता हूं? नहीं, नहीं, नहीं। मोसेस ई. लार्ड ने मेरी भावनाओं को ही व्यक्त किया, जब उसने लिखा, ''जब, पाठक ने मेरी तरह इसका अध्ययन कर लिया हो [विचाराधीन

पद्य का], तो उसे संतुष्टि की भावना आएगी कि उसने इसे पूरा समझ लिया है, उसके पास वह उत्तेजना होगी जिसका दावा करने से मुझे डर लगता है।''[10] हो सकता है कि हमारे मन में कई बातों पर संदेह हो, परन्तु हमारे इस वचन पाठ में कई ऐसी सच्चाइयां हैं (स्पष्ट या सांकेतिक) जिनसे परमेश्वर नहीं चाहता कि हम अनजान रहें। आइए उनमें से कई सच्चाइयों को देखते हैं।[11]

''एक'' का महत्व है

आपको लग सकता है कि आप ''केवल एक'' हैं इसलिए आपका कोई महत्व नहीं है। यह देखते हुए कि ''एक'' शब्द कितनी बार आया है, इस पूरे वचन पाठ को देखें। *एक* मनुष्य के द्वारा संसार में विनाश आया; *एक* मनुष्य के द्वारा संसार में बचाव आया। एक जीवन की सामर्थ को, विशेषकर प्रभु को समर्पित एक जीवन की सामर्थ को कभी कम मत आंकें। मुझे बहुत पुराना एक नारा याद आता है: ''मैं केवल एक हूं, परन्तु मैं एक हूं। मैं सब कुछ नहीं कर सकता, परन्तु मैं कुछ कर सकता हूं। और जो कुछ मैं कर सकता हूं, परमेश्वर की सहायता से, वह मैं *करूंगा*।''

पाप भयंकर है

पाप की अवधारणा को आज समाज में कम महत्व दिया जाता है। कई तो पाप के होने को मानते ही नहीं हैं, जबकि दूसरे यह ज़ोर देते हैं कि बाइबल जिसे ''पाप'' कहती है वह इतना बुरा नहीं है। इसके विपरीत, जब हम आदम के पाप और उसके परिणामों को देखते हैं, तो हम पाते हैं कि पाप वास्तविक है, भयानक है और इसका परिणाम भयभीत करने वाला है। ''इतिहास की सबसे लम्बी और सबसे काली परछाईं''[12] आदम के पाप करने पर ही संसार के दृश्य पर पड़ी थी, जिससे संसार में मृत्यु आई!

अनुग्रह अद्‌भुत है

मनुष्य जाति की सहायता करने को परमेश्वर विवश नहीं था, परन्तु, आश्चर्यों का आश्चर्य कि उसने हमसे प्रेम किया (यूहन्ना 3:16)। पौलुस ने लिखा कि ''जहां पाप बहुत हुआ, वहां अनुग्रह भी कहीं अधिक हुआ,'' (रोमियों 5:20)। *पिलग्रिम'स प्रोग्रेस* के लेखक जॉन बनियन (1628–1688) ने अपनी जीवनी का शीर्षक *ग्रेस अबाउंडिंग,* रोमियों 5:20 के आधार पर बनाया था।[13]

क्रूस अत्यावश्यक है

यदि मसीह उसे ठीक करने न आता जिसे आदम के पाप ने बिगाड़ा था, तो उससे होने वाली त्रासदी को शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता। सच्चाई यह है कि वह आया और आप के और मेरे लिए क्रूस पर मरा! द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति पर, विंस्टन चर्चिल ने रॉयल एयरफोर्स को इन यादगारी शब्दों के साथ श्रद्धांजलि दी: ''इतने कम लोगों का इतना बड़ा कर्ज़ चुकाने के लिए इतने लोग नहीं हैं।'' क्रूस पर मसीह को देखकर हमें भी कहना होगा, ''केवल *एक* का इतना बड़ा कर्ज़ चुकाने के लिए इतना कुछ नहीं है!''[14]

मृत्यु आवश्यक है

आदम के पाप का एक परिणाम यह हुआ कि ''मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई'' (आयत

12)। ''मनुष्यों के लिए एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है'' (इब्रानियों 9:27)। हम में से कइयों को मरने की बात करना अच्छा नहीं लगता, परन्तु यह अनिवार्य है कि और इसके बाद होने वाला न्याय भी पक्का है। समझदार व्यक्ति जीवन के लिए ही नहीं, बल्कि मरने के लिए भी तैयारी करता है।

जी उठना सुनिश्चित है

मसीह आदम के पाप के प्रभावों को बदलने के लिए आया। आदम के पाप के कारण, हर व्यक्ति पर शारीरिक मृत्यु आती है; परन्तु मसीह के द्वारा एक दिन हम सब जी उठेंगे। यीशु के दोबारा आने पर, ''... जितने कब्रों में हैं, उसका शब्द सुनकर निकलेंगे। जिन्होंने भलाई की है वे जीवन के पुनरुत्थान के लिए जी उठेंगे और जिन्होंने बुराई की है वे दण्ड के पुनरुत्थान के लिए जी उठेंगे'' (यूहन्ना 5:28, 29)।

ज़िम्मेदारी व्यक्तिगत है

हम में से हर कोई अपनी नियति या भविष्य का ज़िम्मेदार स्वयं है। आदम के पाप के कारण, हम शारीरिक रूप में मरते हैं; और परमेश्वर के अनुग्रह के कारण हम एक दिन शारीरिक रूप में जीएंगे। परन्तु आत्मिक तौर पर हम *अपने* ही पापों के कारण मरते हैं, और मसीह के बलिदान में विश्वास के द्वारा ही हम अनन्तकाल तक जीवित रह सकते हैं।[15] शारीरिक जन्म हमने अपनी पसन्द से नहीं लिया, परन्तु विश्वास हम अपनी इच्छा से कर सकते हैं। एक बार एक बूढ़े प्रचारक से पूछा गया कि उद्धार तो सबके लिए है, तो फिर सब का उद्धार क्यों नहीं होता। उस बूढ़े का जवाब था, ''ऐसा क्यों है कि बर्फ़ से लदे पहाड़ों की चोटियों से सदियों से निर्मल शुद्ध पानी के झरनों के बहने के बावजूद आज भी गंदे लोग हैं?''[16] तथ्य है कि कुछ लोग नहाने से इनकार कर देते हैं। ठीक वैसे ही कई लोग यीशु को जो परमेश्वर का दान है मानने से इनकार करते हैं।

निर्णय लेना अनिवार्य है

जेम्स आर. एडवर्ड ने लिखा है, ''मनुष्य होने का अर्थ पसन्द के चौराहे पर खड़े होना है।''[17] आप अपने पाप में बने रहकर उस पाप के दमनकारी परिणामों को भुगतना चुन सकते हैं या आप यीशु में विश्वास लाकर उसे अपने जीवन का राजा बनाने का निर्णय ले सकते हैं। मसीह की बात मानने का अर्थ अपने पापों से क्षमा पाना और आपके लिए तैयार परमेश्वर की आशिषों को पाना है। कइयों को लगता है कि वे निर्णय लेने से इनकार कर सकते हैं, या कम से कम उसे टाल सकते हैं; परन्तु जितनी बार वे मसीह के लिए निर्णय लेने में असफल होते हैं, वे अपने विरुद्ध ही निर्णय लेते हैं (देखें लूका 11:23)। बहुत पहले यहोशू ने ललकारा था, ''... आज चुन लो कि तुम किस की सेवा करोगे, ... परन्तु मैं तो अपने घराने समेत यहोवा की सेवा नित करूंगा'' (यहोशू 24:15)।

सारांश

अन्त में मैं पद्य के उस मुख्य विचार पर वापस आना चाहता हूं जिसका हमने अभी-अभी अध्ययन किया है: मसीह ने मनुष्यजाति में आदम द्वारा लाई गई हर समस्या को सम्भाल लिया है।

क्या यह केवल धर्मशास्त्रीय कथन है ? नहीं यह एक व्यावहारिक और व्यक्तिगत सच्चाई है। रोमियों 5:12-21 को केवल आदम और मसीह की कहानी न समझें; यह *आपकी* भी कहानी है।

पवित्र आत्मा ने इस वचन को पहेली की तरह सुलझाने के लिए नहीं दिया बल्कि उपयुक्त होने के लिए सच्चाइयों के रूप में दिया है। एक सच्चाई यह है कि आप आदम के पाप के कारण हर रोज़ कष्ट भोगते हैं और एक दिन उस पाप के कारण आपको मृत्यु के भय का सामना करना पड़ेगा। एक और सच्चाई यह है कि व्यक्तिगत पाप के कारण, आप यहां और अनन्तकाल के लिए परमेश्वर से अलग हो सकते हैं। एक और रोमांचकारी सच्चाई यह है कि आदम के हों या आपके पाप, यीशु पाप के दण्ड वापस लेने के लिए आया। वह *आप* के लिए मरा और *आप* की प्रतीक्षा करता है कि आप उसमें विश्वास लाकर उसकी इच्छा को मान लें (रोमियों 6:3-6)। रोमियों की पुस्तक का यह भाग आपके दिमाग में भरा हो सकता है, परन्तु अब आप इसे अपने मन को छूने देकर अपनी इच्छा को प्रेरित करने दें!

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट

रोमियों 5:18-21 पाठ का एक वैकल्पिक शीर्षक ''पहेली भरे वचन पाठ से स्पष्ट सच्चाइयां'' या ''कठिन वचन पाठ से आनन्ददायक सच्चाइयां'' हो सकता है। एक और सम्भावना ''विवाद और निर्णय'' है।

टिप्पणियां

[1]रिचर्ड रोजर्स, *पेड इन फुल: ए कमैंट्री ऑन रोमन्स* (लब्बॉक, टैक्सस: सनसैट इंस्टीट्यूट प्रैस, 2002), 83. [2]इसका अनुवाद ''धार्मिकता का एक काम'' भी हो सकता है। [3]जो लोग ''केवल शारीरिक मृत्यु'' का ढंग लेते हैं वे इसकी व्याख्या शारीरिक मृत्यु दण्ड के रूप में आदम के पाप के द्वारा ''सब मनुष्यों'' पर ''दण्ड'' के रूप में करते हैं। आयत 18 का ''जीवन के निमित्त धर्मी ठहराया जाना'' मुख्यतया यीशु के मरे हुओं में से जी उठकर सब के लिए उस दण्ड को बदलना होगा (यूहन्ना 5:28, 29)। [4]ब्रूस बार्टन, डेविड वीरमन, एण्ड नील विल्सन, *रोमन्स,* लाइफ एप्लीकेशन बाइबल कमैंट्री (व्हीटन, इलिनोइस: टिंडेल हाउस पब्लिशर्स, 1992), 110. [5]जे. डी. थॉमस, क्लास नोट्स, *रोमन्स,* अबिलेन क्रिश्चियन कॉलेज (1955)। [6]यूनानी धर्मशास्त्र में ''व्यवस्था'' के लिए शब्द से पहले कोई उपपद नहीं है। (अंग्रेज़ी में ''the'' है), परन्तु संदर्भ यह संकेत देता है कि पौलुस मूसा की व्यवस्था की ही बात कर रहा था। [7]लियोन मौरिस, *दि एपिस्टल टू द रोमन्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 241. [8]एफ. एफ. ब्रूस, *दि लैटर ऑफ़ पॉल टू द रोमन्स,* दि टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 121. [9]रोमियों 5:19 में यूनानी शब्द (*pleonazo* से) का अनुवाद ''बहुत हुआ'' यूनानी शब्द (*perisseuō*) का अनुवाद ''अधिक हुआ'' से अलग है (डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ़. अंगर एण्ड विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोज़िस्टरी डिक्शनरी ऑफ ओल्ड एण्ड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स,* [नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985], 6)। [10]मोसेस ई. लार्ड, *कमैंट्री ऑन पॉल'स लैटर टू रोमन्स* (लैक्सिंगटन, कैंटकी: पृष्ट नहीं, 1875; रिप्रिंट, डिलाइट, आरकैंसा: गॉस्पल लाइट पब्लिशिंग कं., तिथि नहीं), 193.

[11]आप यहां सुझाई गई प्रासंगिकताओं को विस्तार दे सकते हैं। [12]जिम हाइल्टन, *जस्ट डाइंग टू लिव* (कलमज़ू, मिशिगन: मास्टर'स प्रैस, 1976), 46. [13]जेम्स आर. एडवर्ड्स, *रोमन्स,* न्यू इंटरनेशनल बिब्लिकल कमैंट्री (पीबॉडी, मैसाचुएट्स: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1992), 154. [14]डेविड एफ. बर्गस, संक., *इन्साइक्लोपीडिया ऑफ़ सरमन्स*

इलस्ट्रेशंस (सेंट लुइस: कन्कोर्डिया पब्लिशिंग हाउस, 1988), 176 से लिया गया। [15]जिम मैक्गुइगन, *दि बुक ऑफ़ रोमन्स,* लुकिंग इन टू द बाइबल सीरीज़ (लब्बॉक, टैक्सस: मोन्टैक्स पब्लिशिंग कं., 1982), 170. [16]जेम्स बर्टन कॉफमैन, *कमैंट्री ऑन रोमन्स* (ऑस्टिन, टैक्सस: फर्म फाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1973), 210 से लिया गया। [17]एडवर्ड्स, 151.